राज्य स्वास्थ्य संसाधन केन्द्र, छत्तीसगढ़

सेंटर फॉर लर्निंग रिसोर्सेज़

unicef
unite for children

नया चूल्हा

कम धुआं
कम लकड़ी
कम समय

छत्तीसगढ़ के १९ जिलों में लगभग ३००० फुलवारियां हैं। इन फुलवारियों में लकड़ी के चूल्हे पर खाना बनाया जाता है। फुलवारी में आने वाली गर्भवती माताएं, शिशुवती माताएं और बच्चे इस चूल्हे पर बने हुए भोजन को खाते हैं, पर इन चूल्हों से निकलते हुए धुएँ से सभी को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

ऐसे चूल्हों पर भोजन को पकने में अधिक समय भी लगता है और ज्यादा मात्रा में लकड़ियों की ज़रूरत भी पड़ती है, तो समय, मेहनत और पैसे सभी खर्च होते हैं। इन कारणों को ध्यान में रखकर, आसानी से उपलब्ध सामग्रियों का इस्तेमाल करके, यह नया चूल्हा बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस पुस्तक में यह नया चूल्हा बनाने की प्रक्रिया को बताया गया है।

लेखन, समन्वय	:	पीयुष सेकसरिया
चित्रण	:	मेघना कुलकर्णी
समन्वय सहाय	:	अनुपम यादव
सहयोग	:	रूबी सोनी
डिज़ाइन	:	संध्या राडकर, अजय रावेतकर

अक्तूबर २०१६

हम एक छोटे चूल्हे पर खाना बनाते हैं और पूरे परिवार को खिलाते हैं। चूल्हा न केवल धुंआ फैलाता है, बल्कि हमारी और हमारे बच्चों की आँखों और फेंफडो को नुकसान भी पहुंचाता है। यह हमारे स्वास्थ्य को हानि पहुंचाता है।

आज हम एक बेहतर नया चूल्हा बनाने की प्रक्रिया सीखेंगे। नीचे दिखाई सामग्री जुटा लें।

मिट्टी मिलाएं।

ऐसा कोना चुने
जहाँ पर चूल्हा बनाना है।
जमीन को हल्के से गीला कर लें।

ईंट बिछाने से पहले
मिटटी की एक परत लगालें।

बिछाने से पहले
ईंटों को पानी से भिगोलें।

ईंटो को दीवारो से एक हाथ
की दूरी पर लगायें।

जिन बर्तनों में खाना बनाते हैं,
उनको रख कर चूल्हे की लम्बाई
और चौड़ाई तय कर लें।

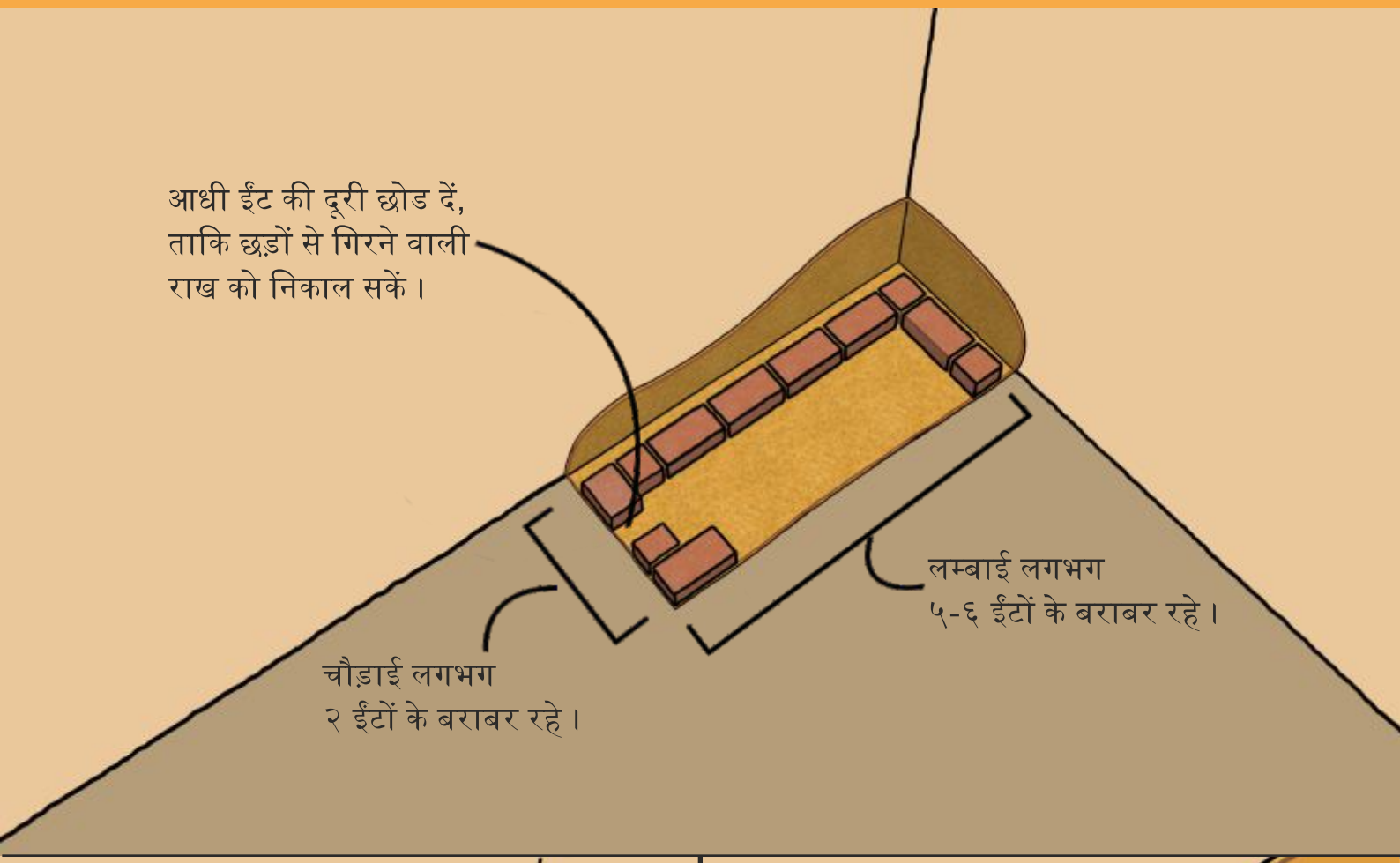
आधी ईंट की दूरी छोड दें,
ताकि छड़ों से गिरने वाली
राख को निकाल सकें।
लम्बाई लगभग
५-६ ईंटों के बराबर रहे।
चौड़ाई लगभग
२ ईंटों के बराबर रहे।

पहली परत की बाकी
ईंटें लगा लगा दें।

६ छड़ों को एक-एक उंगली
की दूरी पर रखें।

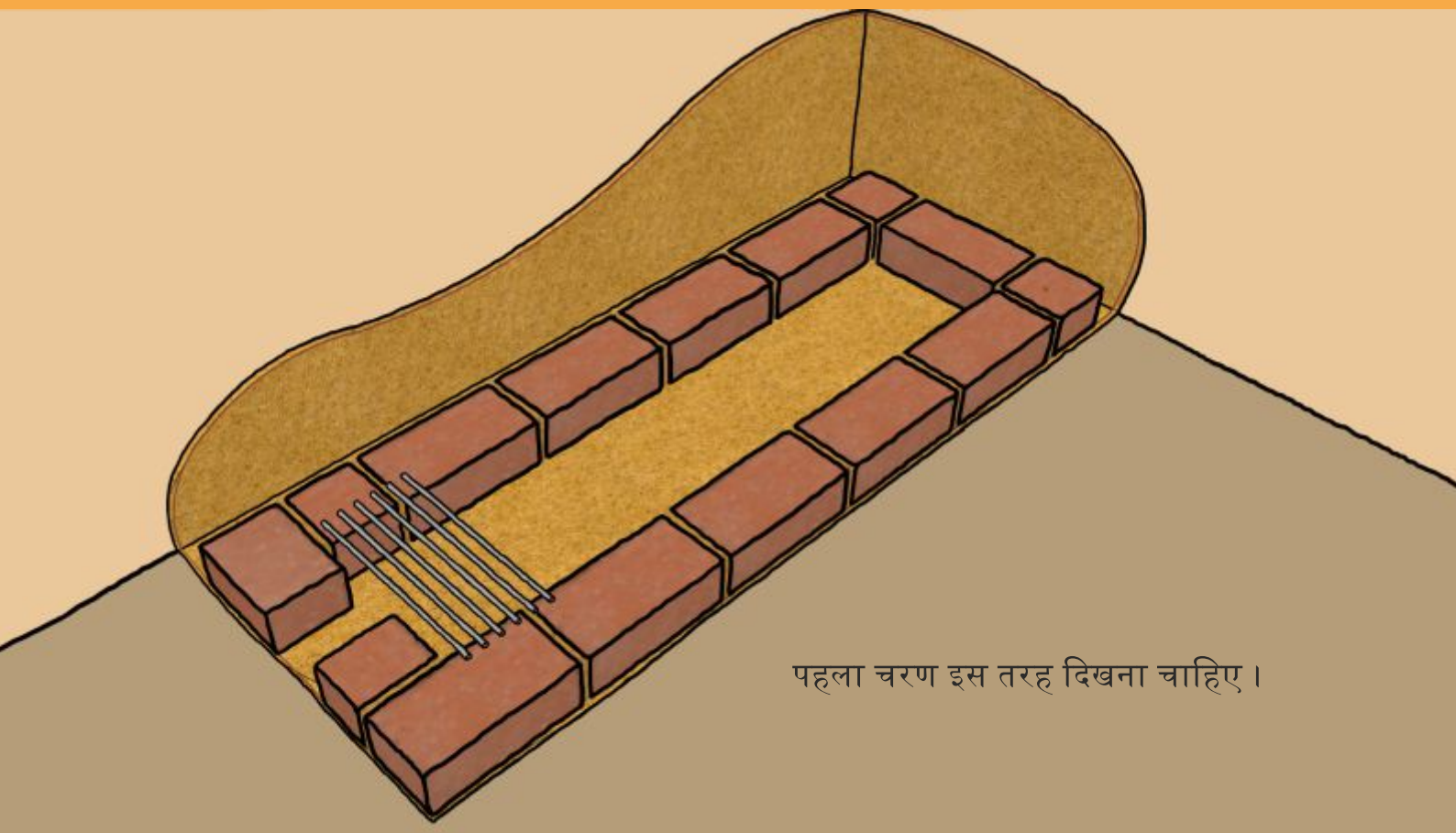

पहला चरण इस तरह दिखना चाहिए।

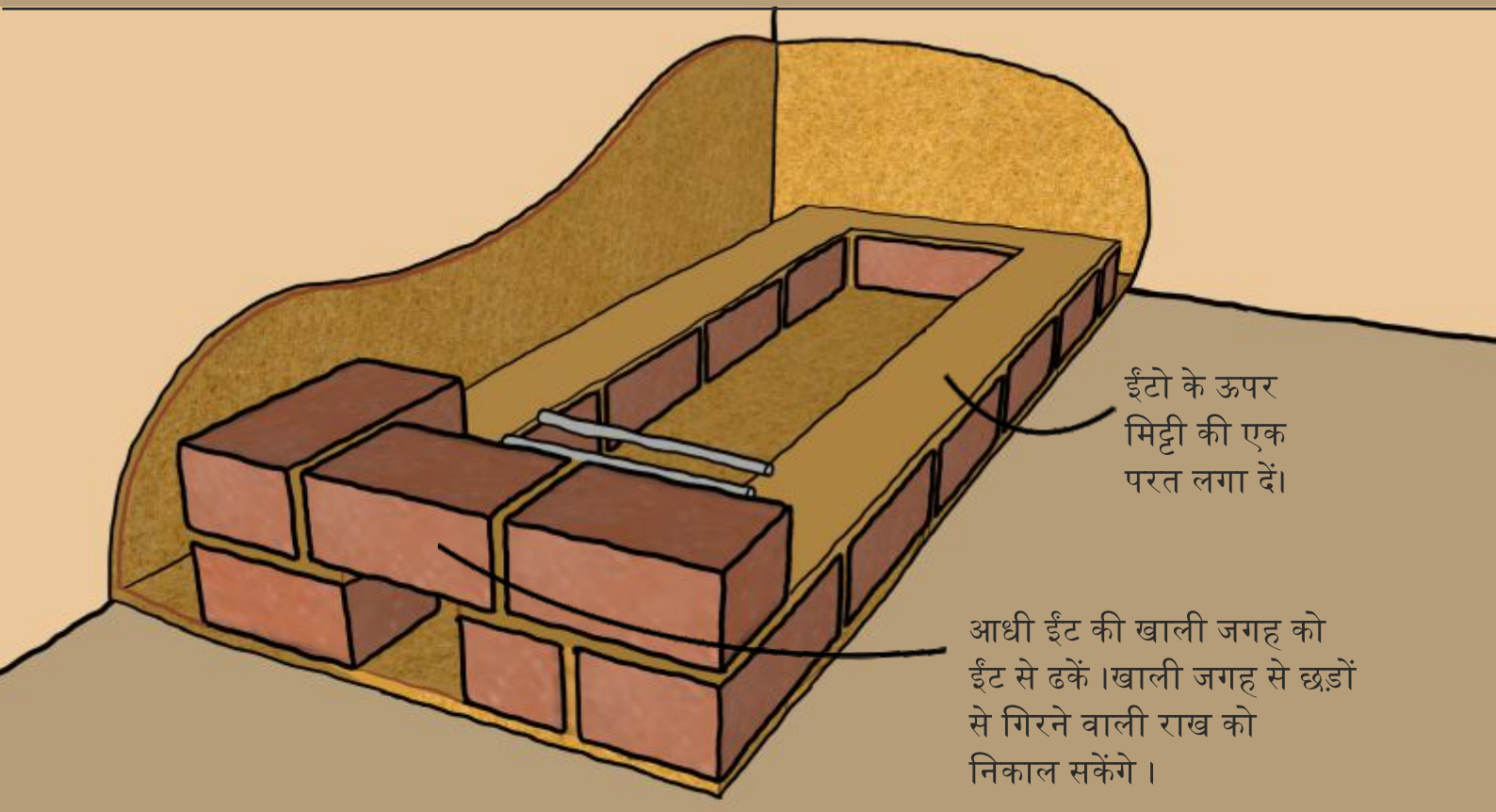

ईंटो के ऊपर
मिट्टी की एक
परत लगा दें।

आधी ईंट की खाली जगह को
ईंट से ढकें।खाली जगह से छ़ड़ों
से गिरने वाली राख को
निकाल सकेंगे।

ईंट लगाते समय ध्यान
रखें कि ईंटों के जोड एक दूसरे
के उपर ना हो ।

तीन चौथाई ईंट
की जगह रखें ।

ईंटों की दूसरी परत को पूरा करें ।

मिट्टी की परत हर
चरण पर लगाते रहें ।

छड़ों के लिये दूसरी परत में जो
जगह छोडी थी, उसे तीसरी
परत में भी छोड़ें ।

आधी ईंट भर की जगह छोड दें । इससे
पाइप से गिरने वाली राख को
निकालने में मदद मिलेगी ।

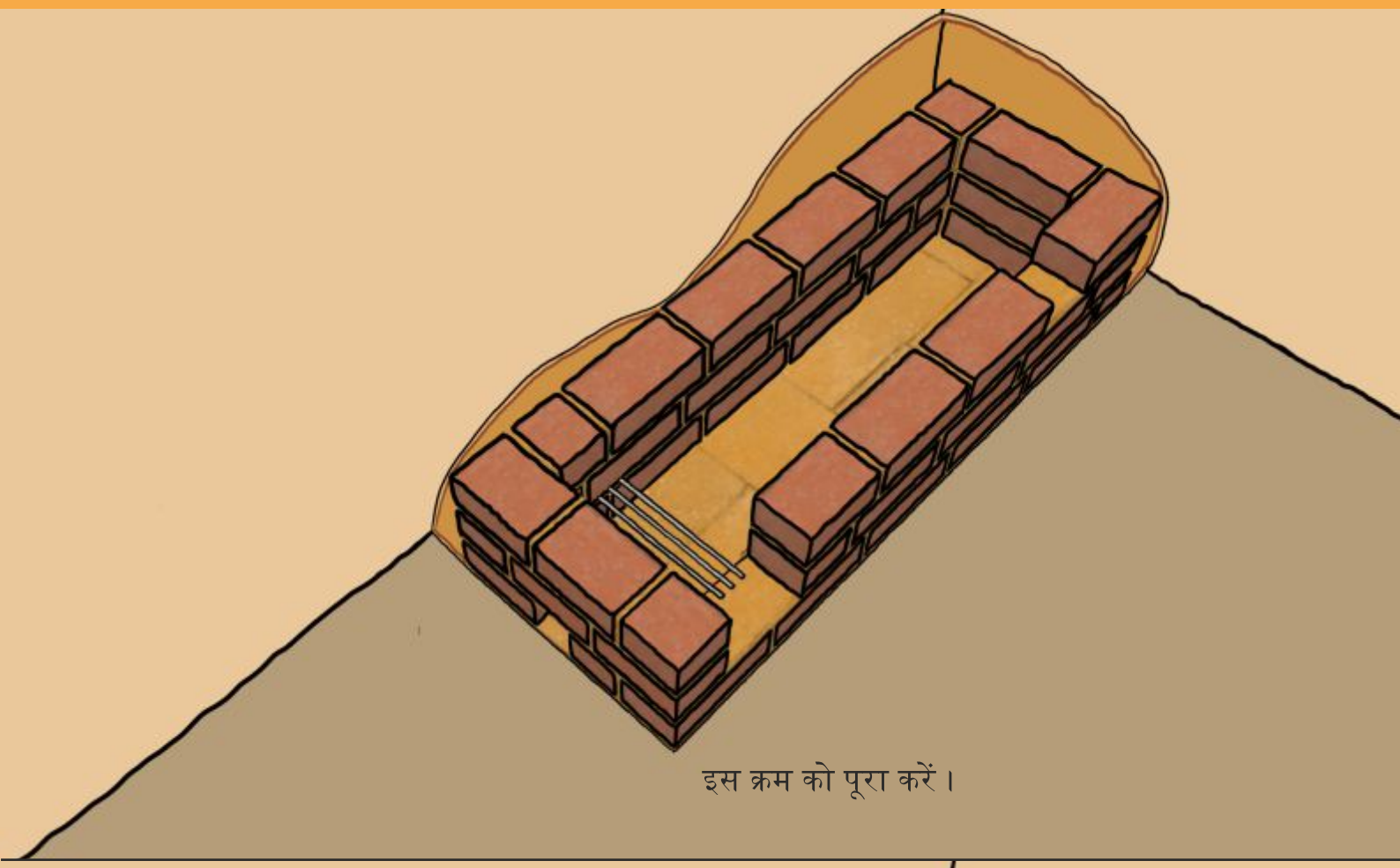

इस क्रम को पूरा करें ।

चूल्हे के अन्दर, छड़ों के बगल में
एक ईंट को रखें जैसे चित्र में
दिखाया गया है ।

चूल्हे के अंदर बालू भर दें। फिर इस बालू को फिसल पट्टी की तरह की ढ़लान दे दें।

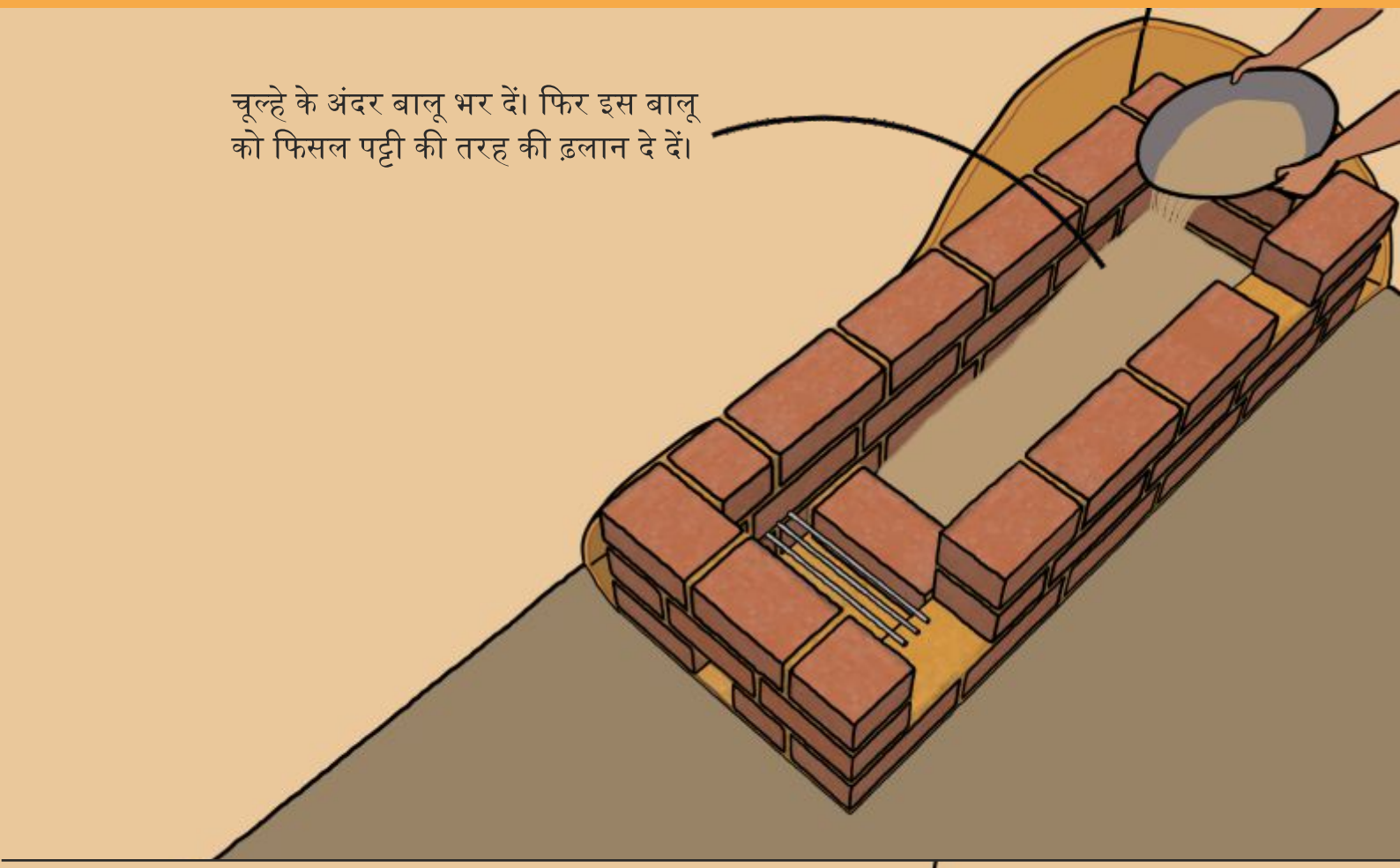

बालू के ऊपर मिट्टी की गीली परत लगाएं।

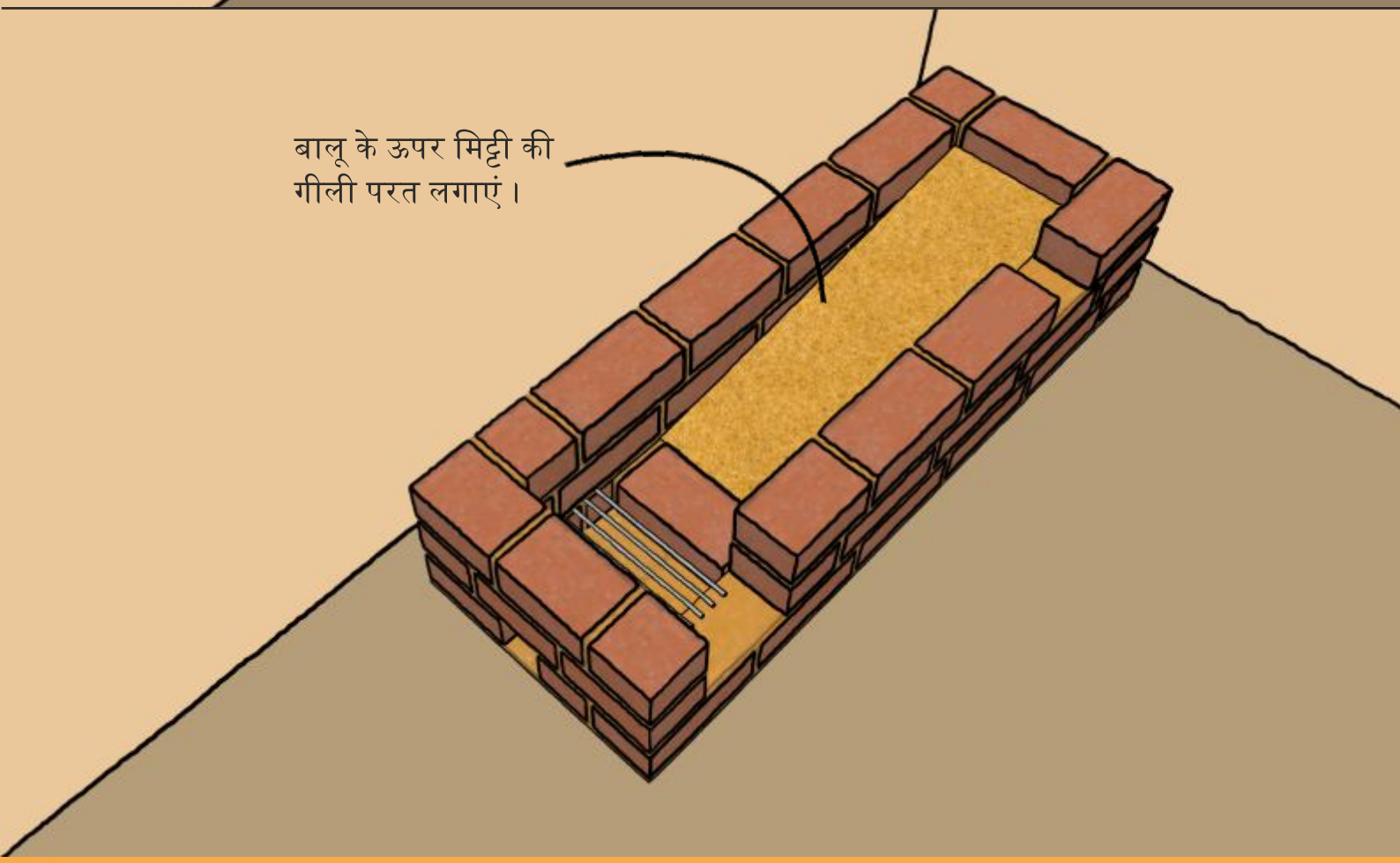

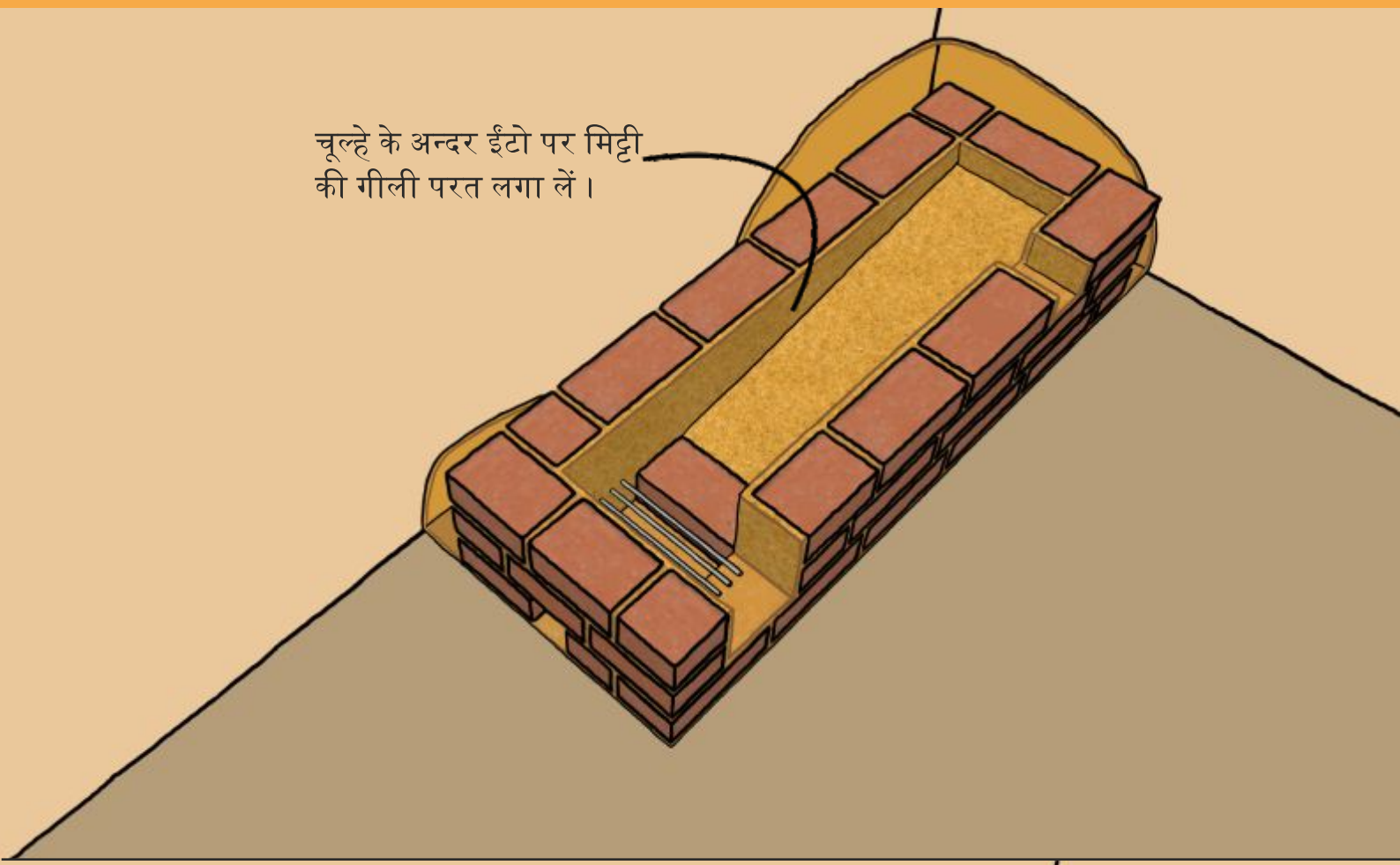

चूल्हे के अन्दर ईंटो पर मिट्टी की गीली परत लगा लें।

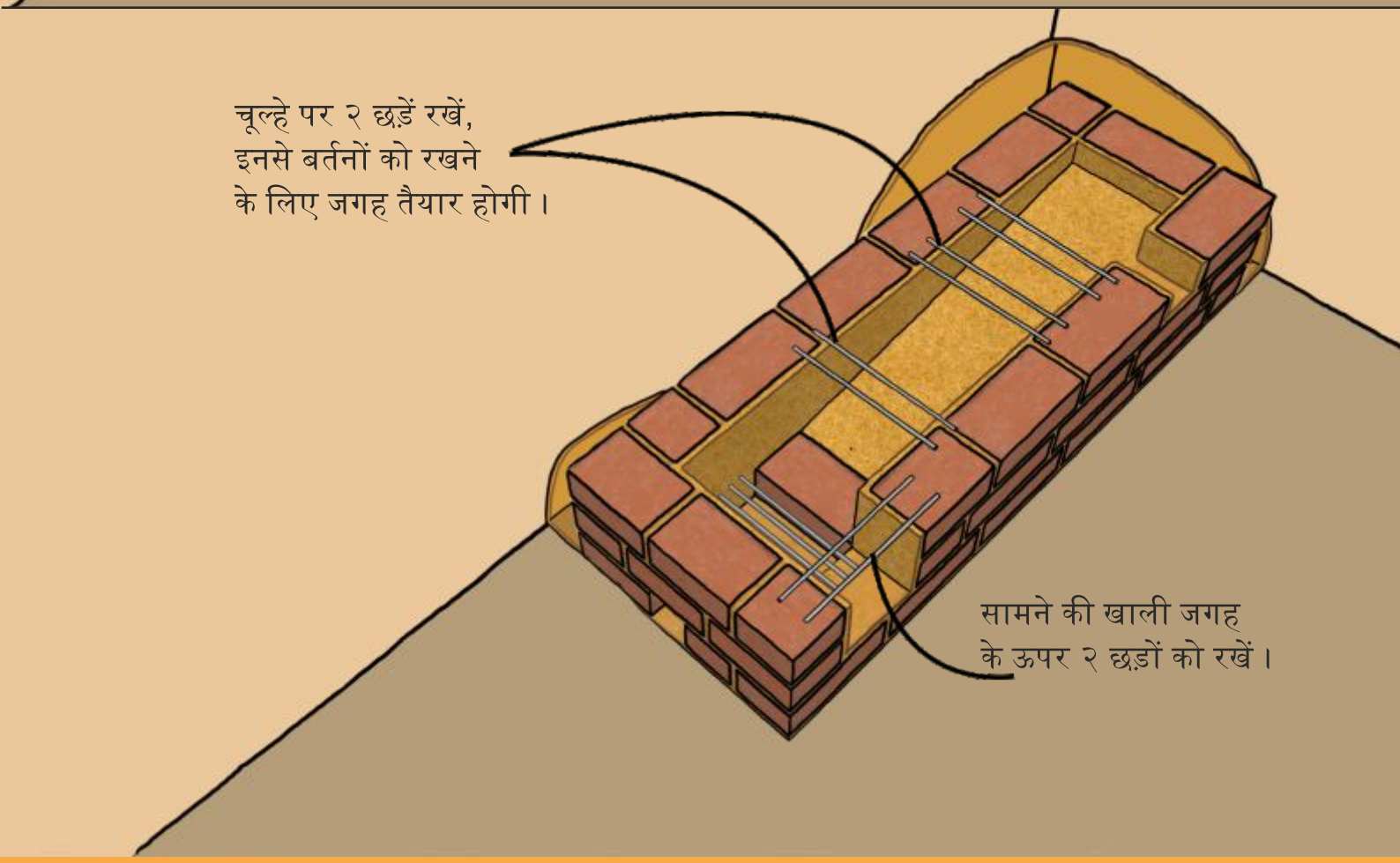

चूल्हे पर २ छड़ें रखें, इनसे बर्तनों को रखने के लिए जगह तैयार होगी।
सामने की खाली जगह के ऊपर २ छड़ों को रखें।

चूल्हे को नापने के लिए
जो बर्तनों का इस्तेमाल पहले
किया गया था, उन्हीं का
उपयोग करके छड़ों की जगह
तय कर लें।

यहाँ एक ईंट रखने
के लिए दो छड़ रखें।

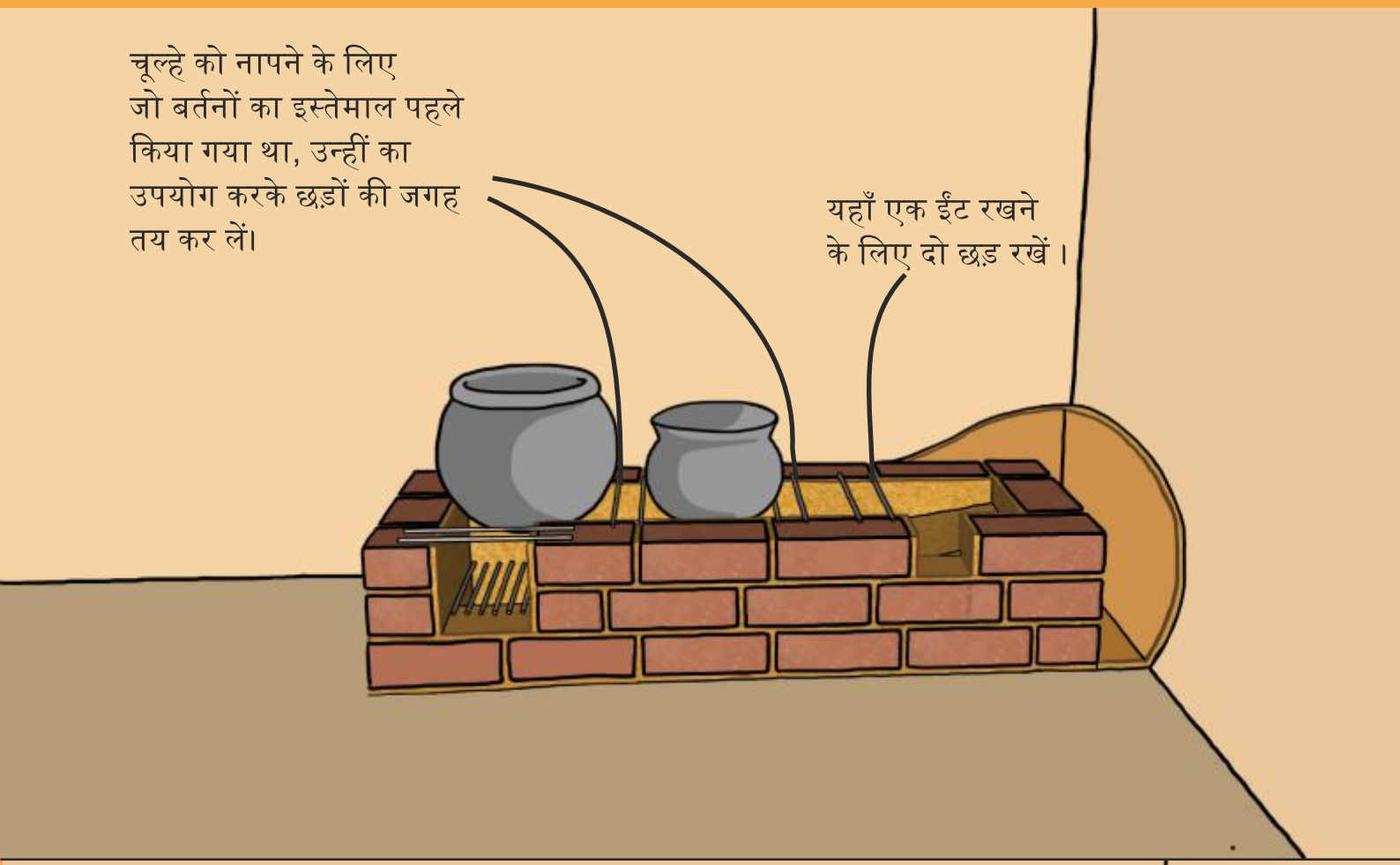

छड़ों को ढकने के लिए आधे टूटे
हुए खपडों का उपयोग करें।
अगर टुकड़े बड़े हैं तो उन्हें आधे
हिस्सों में तोड़ दें।

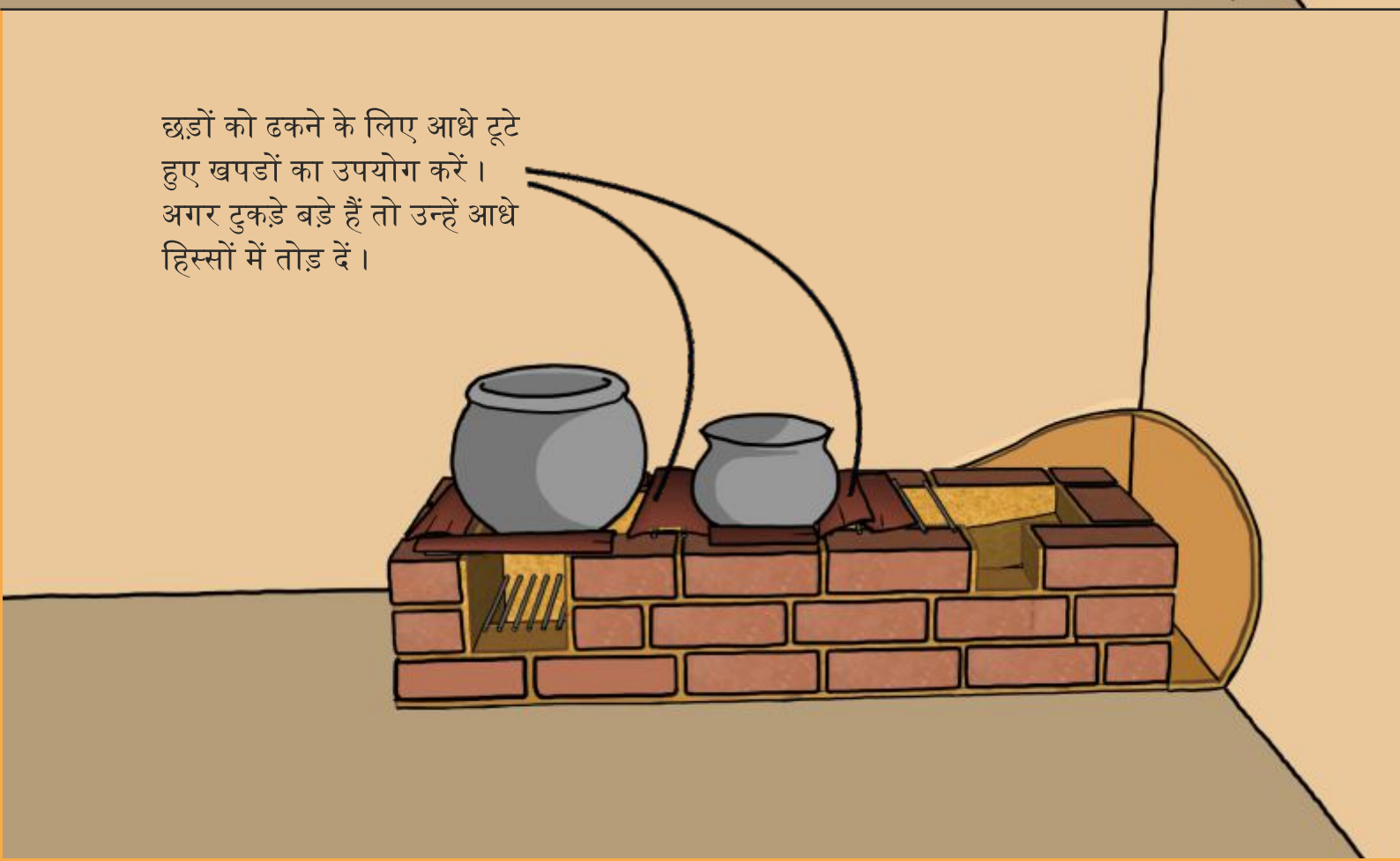

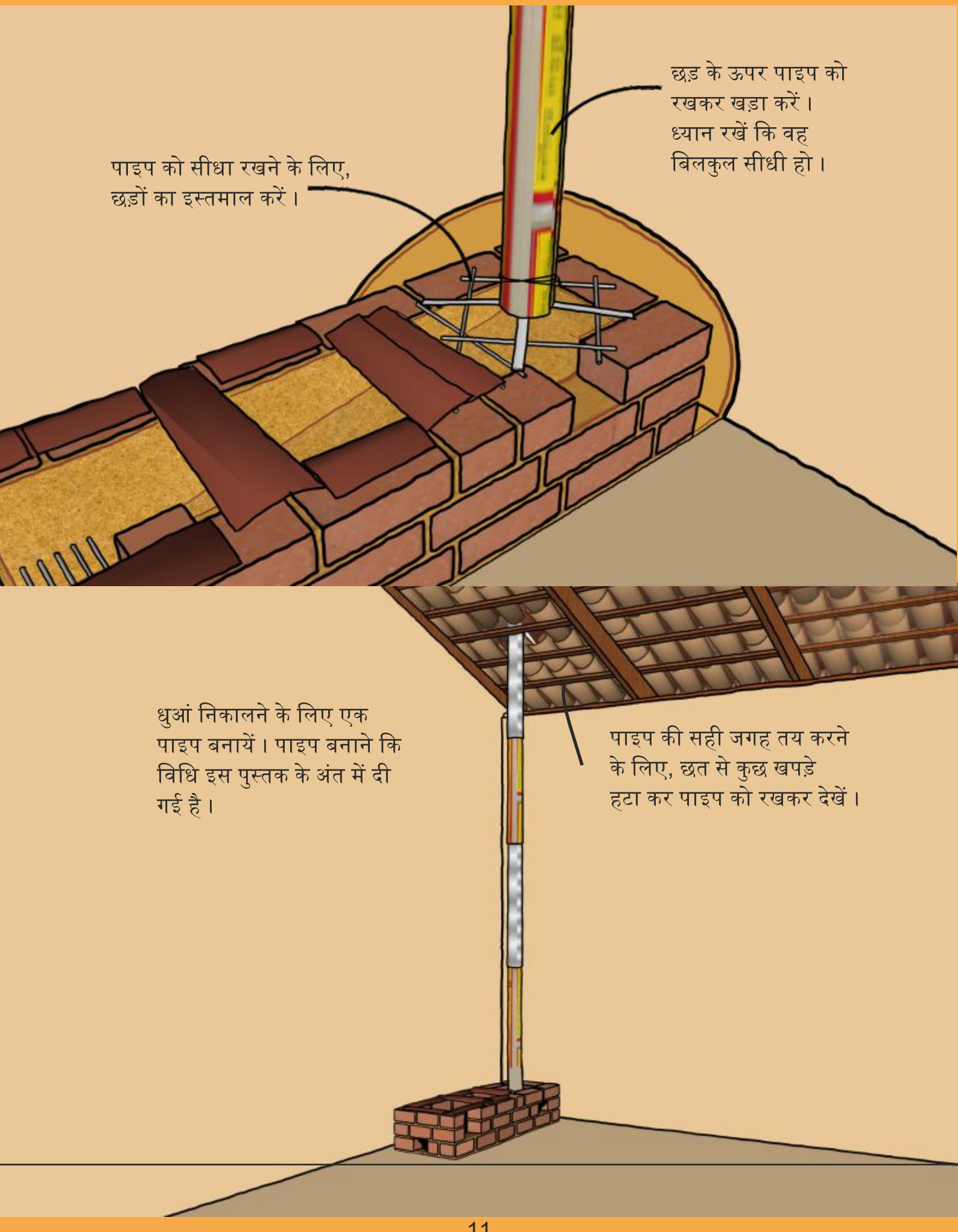

छड़ के ऊपर पाइप को
रखकर खड़ा करें।
ध्यान रखें कि वह
बिलकुल सीधी हो।
पाइप को सीधा रखने के लिए,
छड़ों का इस्तमाल करें।

धुआं निकालने के लिए एक
पाइप बनायें। पाइप बनाने कि
विधि इस पुस्तक के अंत में दी
गई है।
पाइप की सही जगह तय करने
के लिए, छत से कुछ खपड़े
हटा कर पाइप को रखकर देखें।

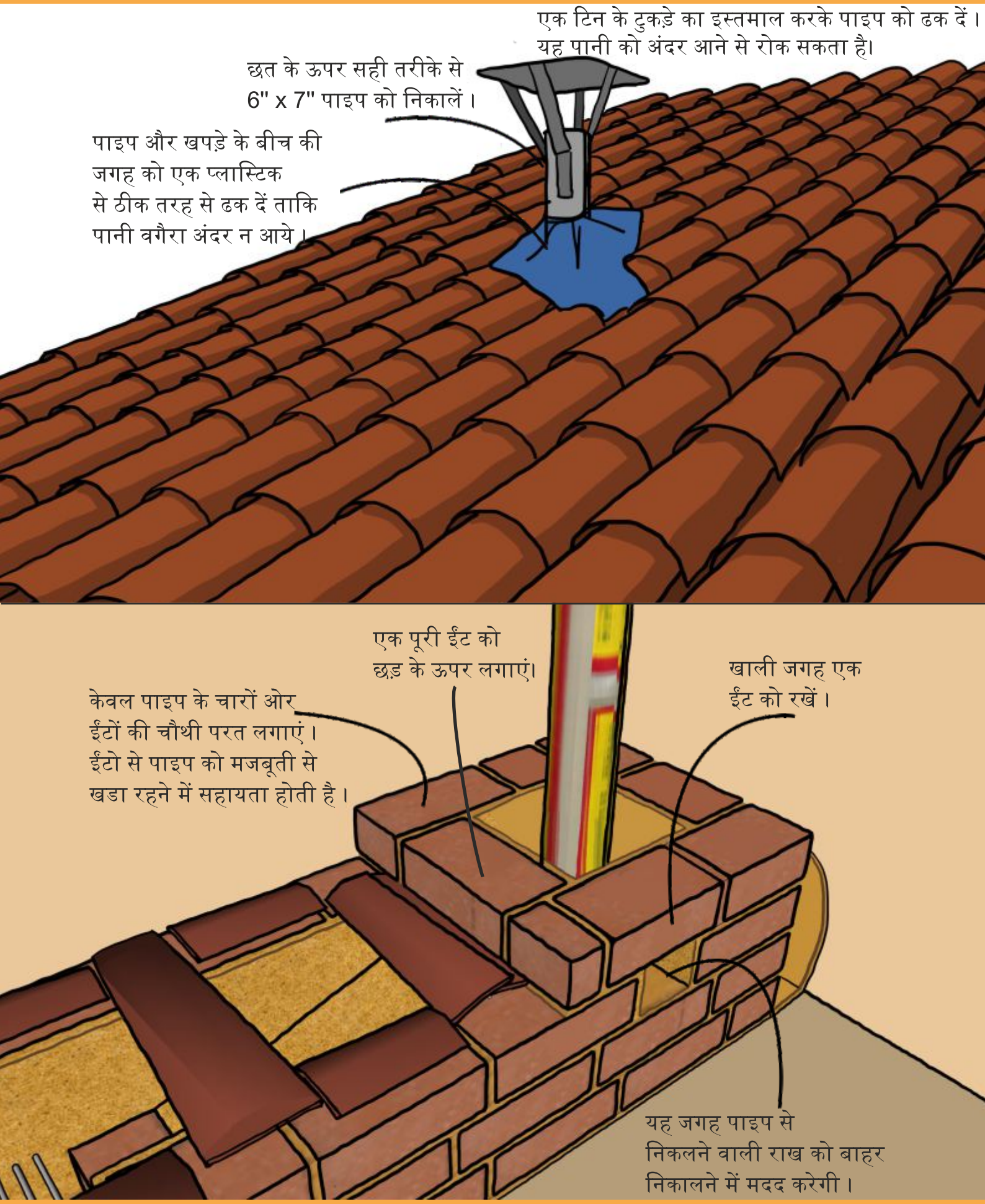
एक टिन के टुकड़े का इस्तमाल करके पाइप को ढक दें। यह पानी को अंदर आने से रोक सकता है।
छत के ऊपर सही तरीके से 6" x 7" पाइप को निकालें।
पाइप और खपड़े के बीच की जगह को एक प्लास्टिक से ठीक तरह से ढक दें ताकि पानी वगैरा अंदर न आये।
एक पूरी ईंट को छड़ के ऊपर लगाएं।
खाली जगह एक ईंट को रखें।
केवल पाइप के चारों ओर ईंटों की चौथी परत लगाएं। ईंटो से पाइप को मजबूती से खडा रहने में सहायता होती है।
यह जगह पाइप से निकलने वाली राख को बाहर निकालने में मदद करेगी।

यहाँ 12 x 12 इंच की ईंट की परत
बनाएं। चूल्हे में जलाने वाली लकड़ी
को इस जगह पर रखा जाता हैं।

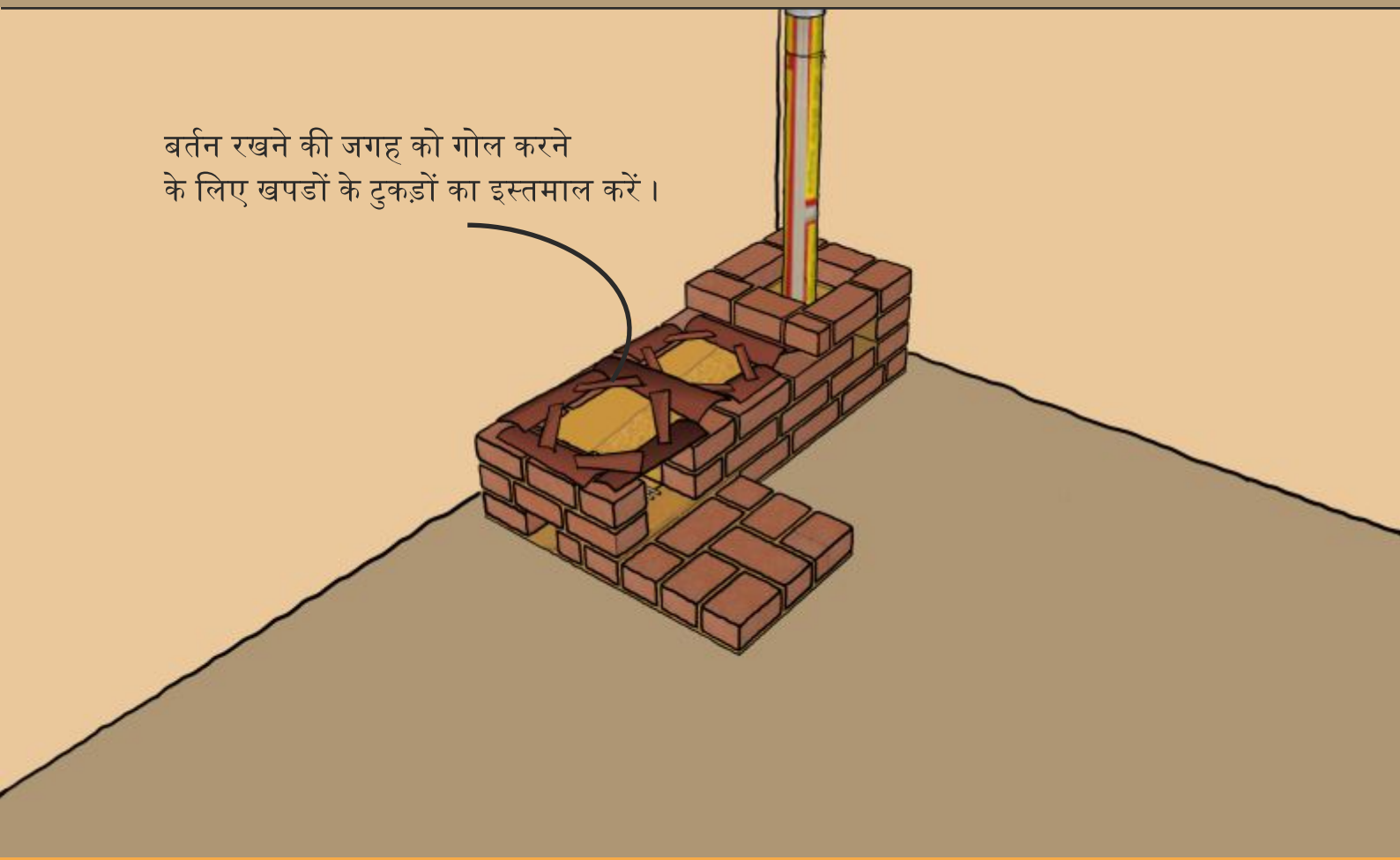
बर्तन रखने की जगह को गोल करने
के लिए खपडों के टुकड़ों का इस्तमाल करें।

बर्तन रखने की जगह के गोल को बनाने के लिए पतली मिट्टी का उपयोग करें ।
ईंट के ऊपर मिट्टी की परत लगायें ।
बालू और मिट्टी डालने से चूल्हा जल्दी ठंडा नही होगा और लकड़ी कम खर्च होगी।
गरम पाइप को एक फुट तक गीली मिट्टी या गोबर से ढक दें ।
चूल्हे और दीवार के बीच की खाली जगह को बालू से भरें और पतली मिट्टी से ढक दें ।
गीले चूल्हे में भूसा जलाकर, उसे परख लें कि सब ठीक ठाक चल रहा है ।
चूल्हे को कुछ समय तक सूखने केलिए छोड़ दें ताकि वह तैयार हो जायें।

देख लें कि पाइप से धुआं
बाहर आ रहा है कि नहीं।

बर्तन रखने की जगह को
छोटा बड़ा करने के लिए
आप खपड़े के टुकड़ों
का उपयोग कर सकते हैं।

चूल्हे के इर्द गिर्द
एक फुट उंची दीवार बनायें। इस से बच्चे आग
से सुरक्षित रहेंगे।

पाइप बनाने की विधि

तेल के टिन के तीन बक्से धोलें और सुखा लें।

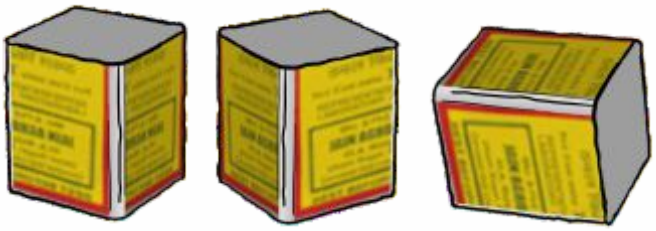

टिन के नीचे और
ऊपर के ढक्कन को काट लें।

एक तरफ से टिन को काटें।

यह समतल टिन अब
मोड़ने के लिए तैयार है।

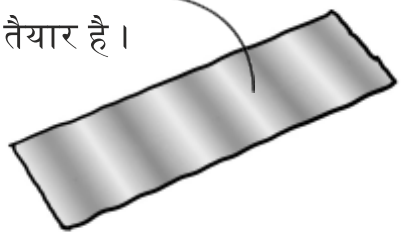

समतल टिन को हथौड़ी से
हल्का पीट लें ताकि उसे
मोड़ने में आसानी हो।

ध्यान रखें कि नीचे की
पाइप उपर की पाइप के
अंदर ४-६ इंच चली
जाये।

अब टिन को एक बांस की
मदद से पाइप के आकार
में मोड लें।

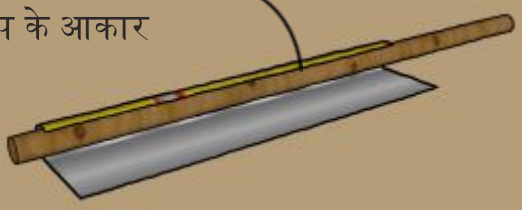

इस प्रकार टिन की पाईप को
एक तार से बांध लें।

इस चूल्हे के कई फायदे होते हैं।

State Health Resource Centre SHRC
1st Floor, State Health Training Centre
Building, Kalibadi, Near Bijli Office Chowk,
Raipur - 492001

UNICEF
503 Civil Lines
Raipur - 492001

Centre For Learning Resources
8 Deccan College Road
Yerawada, Pune - 411 006